REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.2331(UIF)
VOLUME - 7 | ISSUE - 3 | DECEMBER – 2017

भूगोल के विकास में अलैग्जेंडर वॉन हम्बोल्ट तथा कार्ल रिटर का तुलनात्मक योगदान

Dr. Satyabir Yadav
Head, Department of Geography ,
Govt. Collegefor Women, Pali (Rewari)

अलैग्जेंडर वॉन हम्बोल्ट (1769-1859)

आधुनिक भूगोल के संस्थापक अलैग्जेडंर वान हम्बोल्ट का जन्म सन् 1769 ई. में बर्लिन में हुआ था। जब वह 10 वर्ष का था तो उसके पिता का देहान्त हो गया। उसकी प्रारम्भिक शिक्षा माता की देख–रेख में ही हुई। उसने फ्रेंकफर्ट तथा गोटिंजन विश्वविद्याल में भूगर्भ–शास्त्र, वनस्पति शास्त्र, खनिज शास्त्र, पृथ्वी का चुम्बकीय अध्ययन तथा मौसम विज्ञान आदि का ज्ञान प्राप्त किया। उन्होंने प्रसिद्ध भूगोलवेता अल्फ्रेड वेगनर के साथ काम किया सन् 1792 में वह प्रशिया खनन भू–वैज्ञानिक बन गया। भू–गर्भ विज्ञान में अधिक रूचि होने के कारण उसने आल्पस पर्वतों पर बवेरिया, इटली, आस्ट्रिया व स्वीटजरलैंड देशों की यात्रा की। भौगोलिक अध्ययन के लिए यात्राओं में वे विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण उपकरण लेकर चलते थे जिनमें कम्पास, दूरबीन सैक्सटैंट थर्मामीटर, बेरोमीटर, थ्योडोलाइट, प्लेन टेबल आदि प्रमुख थे। इन यंत्रों की सहायता से उसने भूमापन, वायुकार, तापमान समुद्र तल से ऊँचाई तथा जलवायु दशाओं की ठीक जानकारी प्राप्त करने की कोशिश की।

हम्बोल्ट बहुमुखी प्रतिभावान था। टैथम के कथनानुसार उसने वनस्पति विज्ञान, भू–विज्ञान, भौतिकी रसायन विज्ञान, शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान, इतिहास और भूगोल में अन्वेषण किये थे। ब्रोएक (1965) ने अपनी पुस्तक Geography – its scope and Spirit में बताया कि अनेक विज्ञानों को उसने नये तथ्य प्रदान किये तथा भूगोल का तो वह जन्म दाता था।

हम्बोल्ट का विश्व प्रसिद्ध ग्रंथ कॉसमॉस 1845 से 1862 के मध्य पाँच खण्डो में प्रकाशित हुआ प्रथम दो खण्ड 1845 से 1847 में जर्मन भाषा में प्रकाशित हुए। तीसरे व चौथे खण्ड खण्ड क्रमशः 1850 तथा 1885 में प्रकाशित हुऐ कॉसमॉस का पाचंवा खण्ड 1862 में प्रकाशित हुआ।

1. कॉसमॉस 'ग्रंथ के प्रथम खण्ड में भौतिक भूगोल की परिभाषा एवं सीमांकन है इसमें सम्पूर्व विश्व का सामान्य परिचय देते हुऐ ब्रह्माण्ड की उत्पति का वर्णन है।
2. दूसरे खण्ड में मानव इतिहास और सभ्यता का वर्णन है भूदृश्य तथा चित्रकारों द्वारा प्रारम्भ से अब तक के प्रकृति के चित्रणों का वर्णन है जो अनुभाविक अध्ययन पर आधारित है।
3. तीसरे खण्ड में खगोल विज्ञान का वर्णन है यह मानव के दार्शनिक दृष्टिकोण को प्रदर्शित करता है इसमें आकाशीय ग्रहों का अध्ययन किया जाता है।
4. चतुर्थ खण्ड में पृथ्वी से संबंधित वर्णन है इसमें महाद्वीप, महासागर दिये गये हैं।
5. पाचवें खण्ड में वनस्पति शास्त्र का उल्लेख है अर्थात् भूतल पर विभिन्न प्रकार की वनस्पतियों तथा पेड़–पौधो का वर्णन है।

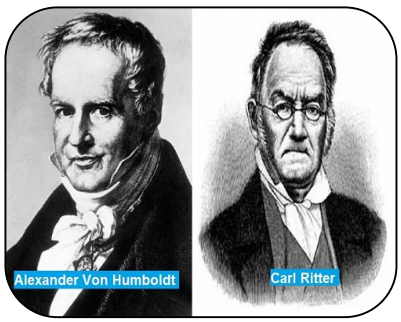

कार्ल रिटर
(Carl Ritter 1779-1859)

कार्ल रिटर का जन्म जर्मनी के मेग्डेलबर्ग नामक स्थान पर सन् 1779 ई. में हुआ था। पाँच वर्ष की आयु में उनके पिता का देहान्त हो गया था। उनकी माँ के लिए परिवार को पांच सदस्यों के पालन पोषण और शिक्षा की व्यवस्था के लिए प्रमुख समस्या का सामना करना पड़ रहा

था। सौभाग्य से एक प्रसिद्ध शिक्षा शास्त्री क्रिसचियन साज्लमैन जो एक नए प्रयोगात्मक शिक्षण संस्थान का उद्घाटन कर रहे थे को एक ऐसे बालक की तलाश थी जिसने सांस्कारिक शिक्षा प्राप्त न की हो।

उन्होंने बालक रिटर को देखा तथा उसने प्रभावित होकर उसको अपना शिष्य बना दिया। अतः रिटर की शिक्षा ऐसी संस्था में हुई थी जहां क्रियात्मक विधि पर बल दिया जाता था तथा प्रकृति के अध्ययन में रूची जागृत करने के लिए चारों और आसपास के देहातों में सेर करवाई जाती थी ताकी बच्चे स्वयं अपने अनुभव में आधार पर मानव तथा प्रकृति की पारस्परकिता को समझ सकें।

अतः रिटर में बचपन से ही प्राकृतिक विविधता में एकता की विचारधारा जागृत हो गई थी इस विद्यालय से शिक्षा प्राप्त करने के बाद 1798 में रिटर को फ्रेकफर्ट नगर के एक धनी बैंकर बेचमैन हाल्वेग के दो बेटों को पढ़ाने के लिए निजी शिक्षक के रूप में नियुक्ति मिल गई। हाल्वेग ने रिटर की विश्वविद्यालय स्तर की शिक्षा दिलवाने की जिम्मेदारी को स्वीकार किया। हाल्वेग के दोनों बच्चो के साथ ही रिटर भी फ्रेकफर्ट विश्वविद्यालय में इतिहास तथा भूगोल का अध्ययन करने लगा।सन् 1814–1816 में मध्य रिटर ने गाटिंजन विश्वविदयालय में भूगोल, इतिहास, भौतिकशास्त्र, रसायनशास्त्र, वनस्पतिशास्त्र तथा खनिज शास्त्र की शिक्षा प्राप्त की। हाल्वेग के एक बेटे की मृत्यु हो गई थी अतः वह दूसरे बेटे के साथ गाटिंजन चले गये थे और वहीं पर ही गाहिजंन विश्वविद्यालय में प्रवेश ले लिया था। रिटर की प्रसिद्ध पुस्तक अर्डकुण्डे (Erd Kunde) के प्रथम तथा द्वितीय खण्ड क्रमशः सन् 1817–1818 में प्रकाशित हुए। इस पुस्तक के प्रथम खण्ड में अफ्रिका महाद्वीप का वर्णन था तथा दूसरे खण्ड में एशिया महाद्वीप के भूगोल का वर्णन है। अर्डकुण्डे पुस्तक का समाज में व्यापक स्वागत हुआ और इसी आधार पर सन् 1890 में रिटर को बर्लिन विश्वविद्यालय में भूगोल विषय का आचार्य (प्रोफेसर) नियुक्त कर दिया गया। रिटर को सन् 1820 में विश्वविद्यालय स्तर पर भूगोल के क्षेत्र में प्रोफेसर स्तर के प्रथम पद पर नियुक्ति का गौरव प्राप्त हुआ। परिणामस्वरूप रिटर ने भूगोल के अध्ययन में भूतल पाये जाने वाले सभी तत्वों का वैज्ञानिक पद्धति से अध्ययन करने पर बल दिया। रिटर के अनुसार पृथ्वी व उसके विभिन्न भागों का उच्चावच, भूदृष्यावली (Landscape), जल संसाधन, समुद्र, जलवायु, खनिज पदार्थ, वनस्पति, जीव–जन्तु, मनुष्य, मिट्टी आदि का भूगोल में वैज्ञानिक अध्ययन बहुत महत्वपूर्ण है। उन्होंने बताया कि प्राकृतिक पर्यावरणीय तत्व मानवीय जीवन को प्रभावित करते हैं। प्राकृतिक पर्यावरण के तत्व एक दूसरे को प्रभावित करते रहते हैं। इन तत्वों की पारस्परिक प्रतिक्रियायें बहुत जटिल होती है और भूगोलवेताओं का मुख्य उद्देश्य उनका अध्ययन करना है।

रिटर के ग्रंथ (Books of Ritter)

रिटर ने अपने जीवन कला में अनेक ग्रंथों, मानचित्रों और शोध पत्रों का प्रकाशन किया था। उनमें मुख्य निम्नलिखित थे –

1. 1804 – यूरोप का भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांख्यिकीय चित्रण (Europe : A Geographical, Historical and Statistical Paintings)।
2- 1806 – यूरोप महाद्वीप के छः मानचित्र।
3- 1807 – यूरोप के भूगोल का द्वितीय खण्ड।
4- 1817 – अर्डकुण्डे (भूगोल) प्रथम खण्ड जिसमें अफ्रिका महाद्वीप का वर्णन था।
5- 1818 – 'अर्डकुण्डे', दूसरा खण्ड, इसमें एशिया महाद्वीप का वर्णन था।
6- 1832–1838 तक अर्डकुण्डे (भूगोल) के छः खण्डों का प्रकाशन
7- 1838–1859 तक अर्डकण्डे के 11 ग्रंथों का प्रकाशन

1817 से 1859 तक रिटर ने अर्डकुण्डे (ErlKunde) के 19 ग्रंथों का प्रकाशन करवाया था। लेकिन इन उन्नीस खण्डों में वह केवल यूरोप, अफ्रिका तथा एशिया महाद्वीप का प्रादेशिक वर्णन ही पूरा कर सका था। 1859 मं उनका देहान्त होने के कारण शेष क्षेत्रों की वर्णन पूरा न हो सका। इन 19 खण्डों की सहायता से रिटर ने भूगोल के प्रादेशिक अध्ययन को नई दिशा देने का कार्य किया। अर्डकुण्डे का शाब्दिक अर्थ पृथ्वी का विज्ञान (Earth Sciene) है। रिटर का भौगोलिक लेखन सभी स्त्रोतों से उपलब्ध सूचनाओं के संश्लेषण पर निर्भर होता था अतः उन्होंने भौगोलिक लेखन में संश्लेषणात्मक विधि का प्रयोग किया। उनका प्रयास नए प्रकार के वैज्ञानिक भूगोल का प्रतिपादन करना था।

हम्बोल्ट तथा रिटर की तुलना–

हम्बोल्ट तथा रिटर दोनों को ही आधुनिक भूगोल का संस्थापक माना जाता है। उनके भौगोलिक विचारों में निम्नलिखित समानताएँ तथा असमानताएँ है।

समानताएँ (Similirities)

1- **आनुभाविक अध्ययन (Empirical Study) –** हम्बोल्ट तथा रिटर दोनों भूगोलवेताओं का विचार था कि भौगोलिक अध्ययन में आधुनिक नियमों (Empirical Laws) को समझना चाहिए। भौगोलिक अध्ययन में अनुभवों के आधार पर विश्लेषण तथा संश्लेषण करके सामान्यीकरण (Genralization) किया जाना चाहिए।

2- **तुलनात्मक विधि (Comparative Method) –** हम्बोल्ट तथा रिटर दोनों ही विद्वानों ने परिघटनाओं के कारण–संबंधों (Cause-relatiships) को समझने के लिए वितरणों के प्रेक्षणों (observations) और भौगोलिक तथ्यों की तुलना करके निष्कर्ष निकालने के लिए तुलनात्मक विधि को अपनाया था।

मानचित्र विधि (Cartographic Method) -

हम्बोल्ट तथा रिटर दोनों ने भौगोलिक तथ्यों के प्रदर्शन तथा वर्णन के लिए मानचित्रण विधि को अपनाया था।

4. पर्यावरण निश्चयवादी विचारधारा
(Environmental deterministic Thought)

हम्बोल्ट तथा रिटर दोनों ही पर्यावरण निश्चयवाद में विश्वास रखते थे। उनके अनुसार प्राकृतिक पर्यावरण के तत्व ही मानवीय क्रियाओं उसके जीवन निर्वाह के साधनों तथा संस्कृति के प्रतिरूपों (Patherns) को निश्चित करते हैं। वे मानते थे कि मानव प्रजातियों में शारीरिक लक्षणों के अंतर प्राकृतिक पर्यावरण के प्रभाव के कारण होते हैं, विश्व के विभिन्न क्षेत्रों में मानव के रहन–सहन, आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक विकास प्राकृतिक पर्यावरण द्वारा प्रभावित होते हैं।

असमानताएँ (Dissimilarities) – हम्बोल्ट और रिटर की विचारधाराओं में समानता होते हुए भी दोनों के प्राकृतिक दर्शन (Philosohpy of Nature) में निम्नलिखित असमानताएँ थी :–

1. ईश्वर उद्देश्य वादी विचारधारा
(Teleological Views)

रिटर का विचार था कि ईश्वर ने पृथ्वी की रचना किसी उद्देश्य से की है। वह मनुष्य को भी ईश्वर की कृति मानता था इसलिए वह प्राकृतिक संसाधनों के अनुकूल ही अपने कार्य करता है। परन्तु हम्बोल्ट डार्विन के वैज्ञानिक विचारों से प्रभावित था अतः वह विकासवाद के सिद्धान्त (Theroy of evoluation) को मानता था।

2. क्रमबद्ध तथा प्रादेशिक भूगोल
(Systematic and Regional Geography)

रिटर की सभी महत्वपूर्ण पुस्तकें प्रादेशिक भूगोल पर केन्द्रित थी लेकिन वे अपने लेखों में क्रमबद्ध अध्ययन पर जोर देते रहे थे।

रिटर का मानना था की प्रादेशिक और क्रमबद्ध भूगोल एक सिक्के के दो पहलू हैं हम्बोल्ट भौगोलिक अध्ययन में क्रमबद्ध विधि को प्रधानता देता था। उदाहरणार्थ उसने जलवायु विज्ञान व वनस्पति भूगोल पर ग्रंथ लिखे थे जिसमें क्रमबद्ध विधि अपनाई थी हम्बोल्ट ने भी प्रादेशिक अध्ययन पर अनेक लेख लिखे थे लेकिन उनका लक्ष्य प्रादेशिक भूगोल नहीं था और न ही भौगोलिक ग्रंथों में कोई महत्वपूर्ण स्थान दिया।

इस प्रकार हम कह सकते हैं कि हम्बोल्ट और रिटर दोनों का कार्य एक दूसरे के पूरक था। एक ओर हम्बोल्ट ने क्रमबद्ध भूगोल के अध्ययन की विधि का स्वरूप निश्चित किया था तो दूसरी और रिटर ने अपने ग्रंथ

अर्डकुण्डे (Erd kunde) में प्रादेशिक व्यक्तित्व का स्वरूप निर्धारित किया था। क्रमबद्ध भूगोल में पृथ्वी की सम्पूर्ण सतह का विस्तारपरक अध्ययन किया जाता है जबकी प्रादेशिक भूगोल में पृथ्वी की छोटी–छोटी ईकाइयों का गहन अध्ययन किया जाता है। अतः हम्बोल्ट और रिटर की मूलभूत मान्यताओं में किसी प्रकार को विरोधाभास नहीं था बल्कि वे प्रादेशिक तथा क्रमबद्ध अध्ययन दोनों को बरावर महत्व देते थे।

3. भौतिक भूगोल तथा मानव भूगोल
(Physical & human Geography)

हम्बोल्ट ने अपने अध्ययन में भौगोलिक तत्वों जैसे धरातल, जलवायु, मिट्टी, वनस्पति, जीव–जन्तु आदि पर बल दिया अतः उसकी पहचान भौतिक भूगोल के साथ जुड़ गई। रिटर ने अपने अध्ययन में मानव को केन्द्रीय स्थान देकर प्रकृति का अध्ययन किया। अतः हम्बोल्ट भौतिक भूगोल के तथा रिटर मानव भूगोल के समर्थक माने जाने लगे।

संक्षेप में हम कह सकते हैं कि हम्बोल्ट और रिटर दोनों ने संयुक्त रूप में भूगोल को दृढ़ आधार प्रदान किया। उन्होंने आधुनिक भूगोल के अध्ययन के लिए एक सम्पूर्ण कार्यक्रम तथा मजबूत आधार प्रस्तुत किया था। अतः हम्बोल्ट तथा रिटर को संयुक्त रूप से आधुनिक भूगोल के संस्थापक कहा जाता है। दोनों की मृत्यु से भौगोलिक विकास के एक युग का अन्त हो गया।

REFERENCES:

1. Ratzel, F (1882) Anthropgeographie, vol I Stuttgart: Ja Engethorn
2. Semple, E.C (1911) Influence of Geographic Environment, Newyork.
3. Ritter,C (1822-1859) Die Erdkunde, 19 Vol, Berlin: G Reimer.
4. Humboldt, A Von (1845-1862), Kosmos, 5 vols, Stuttgart, Cotta. (English translation by E.C.Otte, London, H.G. Bohn.
5. James, P.E (1972) All possible worlds: A history of geographical ideas, Indiaanpoli: odessey press.

Dr. Satyabir Yadav
Head, Department of Geography , Govt. Collegefor Women, Pali (Rewari)